61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 642 Participant Code: 114

दादीजी का समय

एक गाँव मे एक बूढ़ी दादी रहती थी। उसके बेटों ने उन्हे अकेला ही छोड़ दिया था। उनकी माँ पढ़ी-लिखी नही थी। इसलिये वे मानते थे कि इनके साथ रहना उनके लिये बहुत शरम की बात है। मगर वे नही जानते उस माँ की समस्याओं के बारे में। उन दिनों दादीजी की गरीबी के कारण वे बहुत सारी दुरघटनाएँ सह चुकी थी। इसलिए उन्हें पढने-लिखने का अवसर कभी भी नहीं मिल सका। इस सबके बाजूद भी दादी अपने बेटों को एक अच्छी स्थान में पहुँचाने के लिए ~~एक अच्छी~~ अपनी जीवन का आधा समय निकाल दिया। इस वजह से उनके बेटें एक बहुत अच्छे निलय में पहुँच सके। फिर भी वे अपनी माँ को छोड़कर चले गये। अब दादीजी अकेली है। वो बहुत बूढ़ी हो चुकी है। मगर उनका मन अभी भी जवान है।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

यह सब पुरानी बाते सोचकर मी उन्होंने कभी भी हार नही मानी थी। दादीजी ने उस वक्त सोचा की - "मे अभी भी कुछ कर दिखा सकती हूँ। मेरा समय कभी भी नही बीता था। वो तो बस मेरी मन का विचार था। मे फिर से पढ़ सकती हूँ। अभी ही है मेरा समय, मेरी आखरी मौका। मेरे बच्चों को मे एक जीवन में पाठ पढा सकती हूँ।" दादीजी की इस तरह की सोच के कारण वे फिर से पठना शुरू करती है। वे पढ़कर एक बहुत अच्छी पढी-लिखी औरत बन जाती है। इतनी ज्यादा उमर में इतना ज्ञान पाने के लिये उन्हें प्रधानमंत्री से उपहार भी मिला। उस दिन दादीजी ने नया चरित्र लिखा। उस समय दादीजी ने प्रसंग के दौरान बोला की - यही है सही मौका। हमारा समय हमारे मन की तरह है। जब वो बदलेगा तब हमारे जीवन का समय बदलेगा। इसलिए हमेशा आगे बढ़ते रहे।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)